वर्ष 25, अंक 10 Sr. 437, मुंबई, अक्टूबर 2026, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं
उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

सर्व विरति स्वर्ण वर्ष २०३३-२०८३ आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

"अर्हद् भाषितं शुद्धे, दिव्यं देवैरपि स्तुतम् । सन्देशः शोभते सम्यक्, मासिकः पुण्यवर्धकः ॥"



ग्रंथ अर्पण



नवतत्त्व संग्रह पुस्तक विमोचन



प्रवचन में उपस्थित विशाल जनमेदिनी

रथ यात्रा

संपादक एवं प्रकाशक :-
सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी,
मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51
Correspondance Whatsapp only, Website : divyasandesh.store

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषण सूरिभ्यो नमः ॥

शंखेश्वर महातीर्थ की धन्य धरा पर

यात्रिक भवन मध्ये

'सूरिराम' के तेजस्वी शिष्यरत्न, नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक,
चिंतक एवं अनुप्रेक्षक पूज्यपाद पंन्यास प्रवर
श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के चरम शिष्यरत्न मरुधररत्न,
जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, सरस्वती नंदन, पूज्यपाद आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के

संयम सुवर्ण वर्ष 50

की मंगलमय पूर्णाहूति की अनुमोदनार्थ पंचाह्निक महोत्सव प्रसंगे सभी गुरु भक्तों को **सस्नेह निमंत्रण**

शुभ निश्रा

अनेक आचार्य भगवंत आदि साधु साध्वीवृंद

मंगल कार्यक्रम

दि. 4 मार्च 2027 को पूज्यश्री आदि गुरु भगवंतों
का मंगल-प्रवेश दोपहर में प्रवचन, अट्ठम तप के
उत्तर पारणे रात्रि में 'असाढी भक्ति-सरस संवेदना'
दि. 5-6-7 मार्च को सामूहिक अट्ठम तप
दि. 6 तथा 7 मार्च को पूज्यश्री के स्वर्णिमवर्ष
की अनुमोदनार्थ विशेष कार्यक्रम

निमंत्रक एवं कार्यक्रम लाभार्थी

स्व. मातुश्री सुमटीबाई तोलचंदजी तोगाणी,
स्व. मातुश्री हुलासीबाई बाबुलालजी तोगाणी कमलकुंज, मुंबई (गुडा बालोतान)

नोट : अट्ठम के इच्छुक निम्न पत्ते से फार्म प्राप्त कर Refundable 500 रु.
भरकर फॉर्म जमा करावे (अट्ठम संख्या 306 मर्यादित है)

Add. हीर ज्वेलर्स, मणिमहल Office No. 8-A, 2nd Floor, कालबादेवी,
मुंबई-400 002. M.No. नरेशभाई M. 9324393886 साहिल M. 9082157605

रत्न संदेश

लेखक :-
प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

539

निर्मल बुद्धि

बुद्धि तीव्र हो या मंद हो,
यह बहुत महत्त्व की बात नहीं है,
परंतु
बुद्धि को निर्मल बनाना जरुरी है ।
निर्मल बुद्धि ही आत्मा को उत्थान की
दिशा में आगे बढ़ाने में सक्षम है ।
बुद्धि में निर्मलता-पवित्रता न हो तो
वह तीव्र-बुद्धि भी आत्मा का एकांत
अनर्थ ही करती है ।

540

कर्म

ज्यादा मैले वस्त्र को धोने के लिए
साबुन के साथ गर्म पानी भी चाहिए ।
पानी की गर्मी उस मैल को
जल्दी दूर कर देती है ।
बस, इसी प्रकार आत्मा में जमे
हुए कर्म मैल को दूर करना हो तो
तपश्चर्या की गर्मी भी बहुत जरुरी है ।
आग से मोम पिघलता है,
तप से कर्म पिघलते हैं ।

जनवरी 2026 से दिसंबर 2026 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

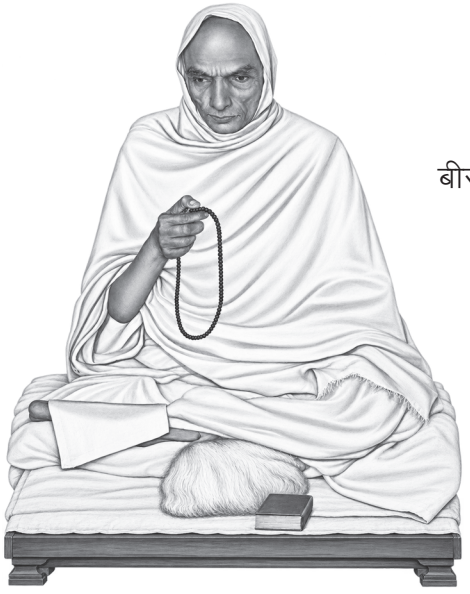
मुख्य-सहयोगी

- **एक सद्गृहस्थ-**कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **मातुश्री शांतिबेन पुखराजजी उमाजी करमाजी भंदर-**शांतिकमल-मुंबई
- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-बोरीवली
- **ओटीबाई वालचंदजी, चाहत विनीतजी बोकरिया** विक्रोली (वे), खिमेल (राज.)

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : **प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
C/o. कल्याणजी सौभागचंदजी जैन पेढी, प्रेमसूरि आराधना भवन, पिंडवाडा-307 002.
स्टे. पिंडवाडा (राज.) संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942



ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

9 शासन के शणगार पूज्य गुरुदेवश्री

लेखक : - पू. आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

(1) पद निःस्पृहता– संवत् 2031 में बेड़ा में उपधान तप के मालारोपण का प्रसंग था। मालारोपण की **'संघ-आमंत्रण-पत्रिका'** के ड्राफ्ट में पूज्यपाद गुरुदेवश्री के नाम के आगे **'प्रशान्त-मूर्ति'** विशेषण लिखा था। पत्रिका का ड्राफ्ट पूज्यपाद गुरुदेवश्री ने देखा और कुछ कहे बिना ही उस विशेषण को काट दिया। बाद में पूज्यपादश्री ने समझाया कि **'मुनि'** पद ही प्रशान्तता का द्योतक है, फिर पुनः लिखने की क्या जरूरत है।

(2) नाम निःस्पृहता– बामणवाड़ा (राज.) में अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रसंग था। प्रतिष्ठादि महोत्सव में निश्रा प्रदान हेतु **पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सुशीलसूरीश्वरजी** पधारे हुए थे। संघ की आग्रह भरी विनंति को स्वीकार कर पूज्यपादश्री भी रुके हुए थे। अंजन-शलाका प्रतिष्ठा के जाहिर-पेम्पलेट में पूज्यपादश्री को नाम देने के लिए अत्यन्त आग्रह किया, परन्तु पूज्यपादश्री ने समझाया कि **''नाम-बिना भी ठहरे ही हैं, फिर नाम की क्या जरूरत हैं। ?''**

ये तो सामान्य प्रसंग हैं। ऐसे तो अनेक प्रसंग पूज्यपादश्री के जीवन में आये हैं, जो हमें निःस्पृहता का श्रेष्ठ आलम्बन प्रदान करते हैं।

(3) अपूर्व वात्सल्य–पूज्यपादश्री के जीवन में सर्व जीवों के प्रति अपूर्व वात्सल्य भाव था। उनके हृदय में धनी-निर्धन, ऊँच-नीच, स्वपक्ष-परपक्ष तथा जैन-जैनेतर की कोई भेदरेखा नहीं थी। इसी कारण सभी प्रकार के लोग उनके पास आकर उनकी अमृतमयी वाणी का पान करते थे। जीव-मात्र के प्रति उनके हृदय में मैत्रीभाव रहा हुआ था। उनके मन में सर्वजीवों के हित की चिन्ता थी। कोई भी व्यक्ति उनके पास बिना संकोच आ सकता था।

(4) **महामंत्र के परम साधक–**पूज्यपाद गुरुदेवश्री के रोम-रोम में नमस्कार महामंत्र का गुंजन था। बाल्यवय से ही नमस्कार महामंत्र के प्रति उनके हृदय में अतीव प्रेम था। नमस्कार महामंत्र चौदह पूर्व का सार है और चौदहपूर्वी भी अन्त समय में इसी महामंत्र का ध्यान और चिन्तन कर समाधि भाव को प्राप्त करते हैं। इस महामंत्र पर पूज्यपादश्री ने महान् अनुप्रेक्षा की है और जैन समाज को महान्

उच्चतम साहित्य भेंट किया है । जिनशासन के प्राणसभा **'नमस्कार महामंत्र'** के अनेक नगरों में उनकी निश्रा में अनुष्ठान हुए हैं । **'नमस्कार महामंत्र', 'परमेष्टि-नमस्कार', 'महामंत्र की अनुप्रेक्षा', 'नमस्कार-दोहन'** तथा **'साधना'** आदि अनेकानेक हिन्दी व गुजराती पुस्तकों में नमस्कार-महामंत्र की उनकी अनुप्रेक्षा के साक्षात् दर्शन होते हैं ।

(5) प्रभावक वाणी–पूज्यपादश्री की वाणी अत्यन्त प्रभावशाली थी । उनकी वाणी अत्यन्त सौम्य व मधुर थी । उनकी वाणी सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध बन जाते थे । प्रेरणास्पद उनकी वाणी के श्रवण से मारवाड़-गुजरात और मुम्बई में अनेकानेक उपधान-उद्यापन तथा नमस्कार महामंत्र के अनुष्ठान हुए हैं । गृहस्थावस्था में उन्हीं की प्रेरणा और सहयोग से स्थापित **'नवपद आराधक समाज'** आज भी प्रतिवर्ष नये-नये तीर्थ-स्थलों में सामुदायिक ओली की आराधना करवाता है । अनेक तीर्थों में उनकी निश्रा में **'नवपद आराधक समाज'** की ओर से सामुदायिक ओली की आराधनाएँ हुई हैं ।

(6) व्यवहार तथा निश्चयनय के साधक–पूज्यपाद गुरुदेवश्री के जीवन में व्यवहारनय और निश्चयनय का सुन्दर सुमेल था ।

''निश्चयदृष्टि हृदय धरी जी, पाले जे व्यवहार । पुण्यवंत ते पामशे जी, भव समुद्रनो पार ।।''

उपर्युक्त पंक्तियों में न्यायविशारद **उपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराज** ने मुक्ति-मार्ग का स्पष्ट सूचन किया है । पूज्यपादश्री के जीवन में व्यवहार के सम्पूर्ण पालन के साथ-साथ निश्चयनय की भी अपूर्व साधना थी । वर्तमान जैन समाज में ध्यानयोग के प्रकृष्ट साधक होने पर भी उनका व्यवहार अत्यन्त शुद्ध था । वे व्यवहार में औचित्य का बराबर पालन करते थे । अभ्यन्तर तप की अन्तरंग साधना के साथ-साथ बाह्य तप भी उनके जीवन का अभिन्न अंग था । दीक्षा के बाद वर्षों तक उन्होंने एकासने का तप किया । शारीरिक कमजोरी होने पर भी वर्धमान तप की उन्होंने 52 ओलियाँ पूर्ण की थी । वर्षों तक नवपद की ओलियाँ की थी ।

विशुद्ध संयम का पालन तो उनके जीवन का प्राण था । इसके अनेक प्रसंग उनके जीवन में देखने को मिलते हैं ।

चार-छह दिन के बाद भी काप निकालने के लिए उनसे प्रार्थना करते तो भी वे स्पष्ट निषेध कर देते थे ।

देवलोक गमन के एक दिन पूर्व वैशाख शुक्ला त्रयोदशी संवत् 2036 की रात्रि में उनको अत्यन्त शारीरिक वेदना थी, उस समय रात्रि में अत्यन्त गर्मी के कारण एक मुनिश्री कपड़े से पवन डालने लगे तो तुरन्त हाथ से रोककर निषेध कर दिया । शरीर की अत्यन्त वेदना में भी उनमें संयम-जीवन की कितनी सावधानी थी !!

ध्यान-योग के साधक अनेक जैनेतर योगी पुरुष उनके सम्पर्क में आये । संवत् 2031 में जब पूज्यपादश्री राणकपूर में बिराजमान थे, तब हिमालय में योग-साधना करने वाले कोई योगी पुरुष वहाँ आये थे । कुछ ही समय के बाद उन्हें उदयपुर जाना था, परन्तु पूज्यपादश्री के सत्संग से उन्होंने घंटों तक ध्यान-योग के विषय में चर्चा की थी ।

(7) गुरु-आज्ञापालक–पूज्यपादश्री में गुर्वाज्ञा पालन का अपूर्व गुण था । वृद्धावस्था में भी वे पाद-विहार ही करते थे । डोली में बैठने की उनकी तनिक भी इच्छा नहीं थी, फिर भी रुग्णावस्था में गुर्वाज्ञा को सहर्ष स्वीकार कर उन्होंने डोली में बैठकर पिण्डवाडा से पाटण की ओर विहार किया था ।

(8) मैत्रीभाव के परम उपासक–मैत्रीभाव जो जिनशासन का प्राण है, उसके वे परम उपासक थे । शास्त्रों के गहनतम रहस्यों को प्राप्त कर उन्होंने मैत्री आदि भावों का जैन-समाज में अत्यन्त प्रचार किया था । वे मैत्रीभाव की मात्र बात ही नहीं करते थे परन्तु उनके जीवन के प्रत्येक प्रसंग में मैत्रीभाव के साक्षात् दर्शन होते थे ।

वर्षों पूर्व **मुनिश्री भुवनविजयजी गणिवर्य** (बाद में आचार्यश्री) पाटण पधारे । उनसे पूज्यपाद गुरुदेवश्री के सम्बन्ध में बातचीत हुई । उन्होंने कहा कि **'हम तो मैत्री आदि भावों की सिर्फ बातें ही करते हैं, परन्तु किसी को मैत्रीभाव के साक्षात् दर्शन करने हो, तो मैं पूज्य पंन्यासजी म.सा. के पास ही भेजता हूँ ।'**

कहने का भाव यह है कि पूज्यपादश्री मैत्री-भाव के साक्षात् अवतार थे ।

(9) गम्भीरता के सागर–पूज्यपाद गुरुदेवश्री गम्भीरता के सागर थे । उनकी विशिष्ट गम्भीरता के कारण ही अनेक व्यक्ति अपनी गम्भीर भूलों का उनके पास शुद्धिकरण करते थें और आत्म-शुद्धि कर अपने जीवन को पवित्र बनाते थें ।

(10) अपूर्व समाधि–पूर्व के कर्म के उदय से पूज्यपादश्री के जीवन में अशाता का उदय अधिकांश समय तक रहा था । तीव्र अशाता के उदय में भी उनके मुख पर विशिष्ट स्मित रहा था । जब-जब भी दु:ख आते, तब-तब वे अधिकाधिक दुष्कृत-गर्हा करते थे और दूसरों को भी यही हित-शिक्षा देते थे कि **''दु:ख तो आत्मा में रहे कर्म रूपी कचरे को दूर करता है । दु:ख तो स्वकृत कर्म का ही फल है, अत: उसका सहर्ष स्वीकार करना चाहिये । दु:ख में दीन बनना, नवीन कर्म को पैदा करना है । अत: दु:ख में दुष्कृतगर्हा करते हुए समाधिपूर्वक दु:ख को सहन करना चाहिये ।''**

जीवन के अन्तिम तीन वर्षों में अशाता का तीव्र उदय होने पर भी उनकी समाधि अपूर्व कोटि की थी । दु:ख में भी उनकी अपूर्व समाधि मुमुक्षु आत्मा के लिए एक महान् आलम्बन थी । पूज्यपादश्री देहत्याग के पूर्व समाधि में लयलीन थे । पाक्षिक प्रतिक्रमण की शुभ क्रिया अत्यन्त एकाग्रतापूर्वक कर रहे थे । पक्खी-सूत्र का श्रवण, बारह लोगस्स का कायोत्सर्ग और सर्व जीवों के साथ जागृतिपूर्वक क्षमापना कर, सदा के लिए इस जर्जरित देह का उन्होंने त्याग कर दिया ।

पूज्यश्री का जीवन एक आदर्श जीवन था । चौथे आरे के एक पवित्र महात्मा की भाँति आदर्श जीवन जीकर उन्होंने भव्यजीवों के लिए एक महान् आलम्बन प्रस्तुत किया है ।

लाखों के तारणहार पूज्य गुरुदेवश्री भौतिक-देह से तो चले गये हैं, परन्तु आत्म गुण-देह से तो पूज्यश्री सदा विद्यमान ही है ।

पूज्यपाद गुरुदेवश्री के आदर्श जीवन को नजर समक्ष रखकर सभी कोई अपने जीवन में उन गुणों को प्राप्त करने में प्रयत्नशील बनें, इसी भावना के साथ पूज्यश्री को कोटि कोटि वन्दन । **(क्रमश:)**



महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा

-: लेखक :-
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी

शंका-समाधान

केशीकुमार–संसार में बहुत से कुमार्ग है, जिन पर चलने से आत्मा सन्मार्ग से भ्रष्ट हो जाती है। आप इन गलत मार्गों से अपने आपको कैसे बचा पाते हो ?

गौतम–जिनेश्वर प्ररूपित मार्ग सच्चा मार्ग है और अन्य पाखंडियों के द्वारा बताए मार्ग गलत है। वे जीवात्मा को गलत दिशा में ले जाते हैं। श्रद्धापूर्वक जिनवचन का अनुसरण कर, मैं अपने आपको गलत मार्ग से बचा लेता हूँ।

केशीकुमार–हे गौतम ! वृद्धावस्था और मृत्यु के तीव्र प्रवाह में बह रही आत्मा को कौन बचा सकता है ?

गौतम–जो सछिद्र नौका है, वह अवश्य डुबाएगी परन्तु जो छिद्र रहित नौका है, वह अवश्य पार लगाएगी !

केशीकुमार–वह नौका कौन-सी है ?

गौतम–शरीर नौका है व आत्मा नाविक है और संसार समुद्र है, जिसे महर्षिजन सहज ही तैरकर पार पहुंच जाते हैं।

केशीकुमार–इस संसार में अधिकांश प्राणी अंधकार में डूबे हुए हैं, उन्हें प्रकाश देने वाला कौन ?

गौतम–जिन्होंने राग-द्वेष को नष्ट कर दिया है, वे वीतराग परमात्मा रूपी सूर्य ही विश्व को उद्योत करते हैं।

केशीकुमार–शारीरिक व मानसिक पीड़ाओं से ग्रस्त प्राणियों के लिए क्षेम, शिव व बाधारहित स्थान कौन-सा है ?

गौतम–लोक के अग्रभाग में वह शाश्वत स्थान है, जहां आत्मा में जन्म-जरा-मृत्यु आदि की किसी प्रकार की वेदना नहीं है, परन्तु वहां पहुंचना दुष्कर है । हाँ, रत्नत्रयी की निर्मल साधना द्वारा आत्मा वह स्थान प्राप्त कर सदा के लिए चिंतामुक्त बन सकती है ।

गौतम स्वामी भगवन्त के मुख से इस प्रकार अपने प्रश्नों के समाधान सुनकर केशीकुमार अत्यन्त प्रसन्न हो गए और उन्होंने गौतम स्वामी को प्रणाम किया और उसके बाद अपने विशाल परिवार के साथ भगवान् महावीर प्रभु के परिवार में सम्मिलित हो गए ।

गौतमस्वामीजी के 5 भव

जंबूद्वीप के पूर्व महाविदेह के **पुष्कलावती** विजय में **ब्रह्मावर्त** नाम का देश था, उस देश की राजधानी का नाम **ब्रह्मपुत्र** था ।

वहाँ **'मंगल'** नाम का श्रेष्ठी रहता था, जो अत्यंत ही न्यायप्रिय था । समाज में सर्वत्र उसकी इज्जत और मान-प्रतिष्ठा थी ।

उसी नगर में **'सुधर्म'** नाम का श्रावक रहता था, नाम के अनुरूप उसके गुण थे । समान स्वभाववालों के साथ मैत्री का संबंध जल्दी हो जाता है, इस नियम के अनुसार मंगल व सुधर्म के बीच मैत्री का संबंध जुड़ गया और वह संबंध धीरे-धीरे दृढ़ होता गया ।

हर धर्म-आराधना में मंगल व सुधर्म सदैव साथ रहने लगे ।

एक बार मंगल श्रेष्ठी बीमार पड़ गए । अनेक उपचार करने के बाद भी मंगल श्रेष्ठी की बीमारी बढ़ती गई । अपने जीवन की अंतिम स्थिति देख मंगल ने सांसारिक प्रवृत्तियों से संपूर्ण निवृत्ति ले ली और अपने मन को धर्म-आराधना में जोड़ दिया ।

अंत में उन्होंने आजीवन अनशन व्रत स्वीकार लिया ।

दिन पर दिन बीतने लगे । ग्रीष्म ऋतु होने के कारण उनकी प्यास बढ़ने लगी ।

सुधर्म श्रेष्ठी मंगल सेठ को अंतिम आराधना कराने लगे । मंगल सेठ के मन को धर्म-आराधना में जोड़ने के लिए वे भरसक प्रयत्न करने लगे...परंतु जल के अभाव के कारण मंगल श्रेष्ठी का गला खूब सूखने लगा । उनका मन विह्वल हो गया...और वे आर्त्त ध्यान में डूब गए । वे `पानी ! पानी !' पुकारने लगे । प्रतिपल तृषा की वेदना बढ़ रही थी और मंगल सेठ की सहनशक्ति घट रही थी ।

अंतिम समय में मंगल सेठ के दिल में कुटुंबीजनों के प्रति तिरस्कार भाव पैदा हो गया । वे सोचने लगे, **``अहो ! नदी-तालाब के मत्स्य कितने भाग्यशाली हैं कि उन्हें जीवन के अंतिम समय में भी पानी की कोई समस्या नहीं होती है । वे सतत शीतल जल का पान करते रहते हैं ।''**

बस, आजीवन अनशन व्रत जैसी दुष्कर साधना को स्वेच्छा से स्वीकार करने के बाद भी मंगल सेठ अपने जीवन के अंतिम पलों में आर्तध्यान के वशीभूत हो गए....परिणामस्वरूप दुर्ध्यान में उनका आयुष्य पूरा हुआ । वे मरकर विपाशांतर नदी में मत्स्य के रूप में पैदा हुए ।

ठीक ही कहा है, जैसी मति होती है, वैसी जीव की गति होती है ।

(दूसरा भव)

मत्स्य बना मंगल श्रेष्ठी का जीव अब सतत चौबीस घंटे जल में क्रीड़ा करने लगा । जल ही उसका प्राण हो गया । अपने से छोटे मत्स्यों का शिकार कर वह अपनी जीवन-यात्रा आगे बढ़ाने लगा ।

एक शुभ दिन उस मत्स्य का भाग्य का उदय हुआ । उस मत्स्य ने जिन प्रतिमा के बाह्य आकारवाला एक मत्स्य देखा । उस मत्स्य को देखते-देखते उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया । उसे अपने पूर्व भव की स्मृति हो आई...और उसके साथ ही उसका हृदय पश्चात्ताप से भर गया ।

उसे लगा, ``अहो ! पूर्व भव में मैंने चारों प्रकार के आहार का त्यागकर अनशन व्रत स्वीकार किया था, जबकि इस भव में निरंतर जीव-हिंसा चल रही है । क्या यह मेरे लिए उचित है ?''

बस, इस प्रकार विचारकर उसने अपने जीवन से हिंसा को तिलांजलि दे दी । उसने हृदय से धर्म की शरणागति स्वीकार की ।

एक बार सुधर्म अर्थार्जन के लिए जहाज में बैठकर यात्रा कर रहा था । वह विपाशांतर नदी पार कर रहा था । अचानक नदी में भयंकर तूफान उठा और सुधर्म का जहाज डूबने लगा । संयोग से उसे लकड़ी का एक टुकड़ा मिल गया । सुधर्म उस टुकड़े के सहारे येन-केन-उपाय से नदी पार करने का भरसक प्रयत्न करने लगा ।

अचानक, मंगल का जीव जो मत्स्य बना था, उसने अपने पूर्वभव के धर्ममित्र सुधर्म को देख लिया । जातिस्मरण ज्ञान के प्रभाव से उसने अपने मित्र को पहिचान लिया । अंतर में मित्र के प्रति स्नेहभाव उमड़ पड़ा । वह उसे बचाने के लिए तैयार हो गया । उसने सुधर्म को अपनी पीठ पर लिया और उसे नदी तट पर ले आया । जहाज के टूटने से और अन्य कोई सहारा नहीं मिलने से सुधर्म के अन्य साथी मौत के मुँह में पहुँच गये थे !

सद्भाग्य से भयंकर आपत्ति में से बचने के कारण सुधर्म खूब जागृत हो गया । वह अब मोह-माया छोड़ धर्मकार्य में लीन बन गया ।

एक दिन उसने समाधिपूर्वक अपने देह का त्याग किया और सौधर्म देवलोक में **विद्युन्माली** नाम का देव बना ।

इधर वह मत्स्य भी उत्तम आराधनापूर्वक समाधि-मृत्यु पाकर सौधर्म देवलोक में **ज्योतिर्माली** नाम का देव हुआ ।

(क्रमशः)

प्रेरक कहानियाँ

लेखक :
प.पू.आचार्यदेव
श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.



240. यह कैसा ट्रूमेन ?

अमेरिका के ट्रूमेन ने हिरोशिमा पर बम डालने की आज्ञा दी । दूसरे दिन पत्रकारों ने ट्रूमेन को घेर कर पूछा, क्या आप रात को शांति से सो सके ? ट्रूमेन ने कहा, **'बहुत शांति से, ज्योंहि मुझे खबर मिली-हिरोशिमा और नागा-साकी राख हो गये और जापान समर्पण कर देगा, वैसे ही मैं पहली बार शांति से सो सका ।'**

उसे किसी ने नहीं पूछा कि 1 लाख 20 हजार लोग मर गये और तुम शांति से कैसे सो सके ? तुम आदमी हो अथवा और कुछ ? लेकिन उस आदमी का नाम था Trueman–असली आदमी ।

आज के शिक्षण से ऐसे ही ट्रूमेन पैदा हो रहे है, जिनमें मानवता नहीं है, कोई करूणा नहीं है ।

जिनके पास प्रेम का कोई झरना नहीं । वे आदमी नहीं मशीन ही है ।

241. खजाना पास में ही है ।

एक भिखारी बडे नगर में एक ही स्थान पर बैठकर 30 वर्षों से भीख मांगता था । उसके बाद वह मर गया । मरने पर म्युनिसिपाल्टी के कर्मचारी उसे ले गयें और उसके कपडें आदि जला दिये । लोगों ने उसके बैठने की जमीन को अपवित्र समझकर कुछ खोदकर साफ करने का निर्णय किया, ज्योंहि जमीन खोदी गई, वहां से धन का खजाना मिला, उस भिखारी को कोई कल्पना नहीं थी कि उसके नीचे ही खजाना भरा है । वह बेचारा ! खजाना समीप में होने पर भी भिखारी ही रहा ।

बस ! ऐसी ही दशा हर इन्सान की है । अंदर ही आनंद का खजाना होने पर भी वह कभी उसे ढुंढता ही नहीं है और उस भिखारी की तरह धनादि की ही भीख मांगता रहता है ।

242. शिक्षा का परिणाम

ज्यों-ज्यों शिक्षा बढी है, व्यक्ति अधिकतर विकृत बनता चला गया है, मात्र अक्षरज्ञान के High Degree के शिक्षण के कारण व्यक्ति के मन में यह भ्रम भर गया कि वह बहुत कुछ जानता है, I am Something का नशा बढ़ जाता है, परन्तु वह जीवन जीने की कला से तो सर्वथा अनभिज्ञ ही होता है ।

सर्वाधिक शिक्षित देश अमेरिका है और वहाँ पागलों की संख्या सबसे अधिक है, शिक्षितों में आत्महत्याएँ और मानसिक तनाव बढ़ते जा रहे हैं, अमेरिका में प्रति वर्ष 15 से 30 लाख लोग मानसिक विकारों के लिए चिकित्सा की तलास करते है । न्युयार्क में 30% लोग रात को बिना नींद की गोली के सोते नहीं है ।

(क्रमशः)



4

पश्चात्ताप की भाव यात्रा

संवेदना :–

सरस्वती नंदन पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्य भवद् भवेऽस्मिन् विभो ! मया भ्रान्तमहो मुधैव ।।4।।

हिन्दी-भावानुवाद

हे प्रभो !

अनादि काल से इन संसार में परिभ्रमण करते हुए मैंने कभी दान नहीं दिया, निर्मल शील का पालन नहीं किया, तप का आचरण नहीं किया और शुभ भावनाओं से मेरी आत्मा को भावित नहीं किया । मेरा यह भव भ्रमण निष्फल हो गया है ।

हिन्दी-काव्यानुवाद

मैंने नहीं जग में कभी कुछ दान दीनों को दिया । मैं सच्चरित भी हूँ नहीं, मैंने नहीं तप भी किया ।।
शुभ भावना मेरी हुई, अब तक न इस संसार में । मैं घूमता हूँ व्यर्थ ही, भ्रम से भवोदधि धार में ।।4।।

गुजराती-काव्यानुवाद

मैं दान तो दीधुं नहि ने शियल पण पाल्युं नहि । तप थी दमी काया नहि शुभ भाव पण भाव्यो नहिं ।
ए चार भेदे धर्ममांथी, कांई पण प्रभु नव कर्युं । मारुं भ्रमण भव सागरे, निष्फल गयुं निष्फल गयुं ।।4।।

विवेचन

अनादि काल से इस संसार में परिभ्रमण कर रही आत्मा आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञाओं के अधीन बनी हुई है ।

उन संज्ञाओं की पराधीनता में से मुक्ति पाने के लिए जगत् बंधु तारक तीर्थंकर परमात्मा ने दान, शील, तप और भाव रुप चार प्कार के धर्म की आराधना बनाई है ।

धन की ममता-आसक्ति को तोडने के लिए दान-धर्म की आराधना बताई है ।

पांच इन्द्रियों के पांच विषय अर्थात् मैथुन संज्ञा पर विजय पाने के लिए शील धर्म की आराधना बताई है ।

आहार की आसक्ति को तोडने के लिए तप धर्म की आराधना बताई है ।

भय संज्ञा को जीतने के लिए भावधर्म की आराधना बताई है ।

हे तारक परमात्मा !

महान् पुण्य के उदय से मुझे मानव जन्म मिला । देव-दुर्लभ ऐसे मानव जन्म में भी मुझे आपका धर्म और आपका शासन मिला ।

परंतु दुर्भाग्य है कि देव-दुर्लभ ऐसा मानव जन्म मिलने पर भी मैंने आपके बताए हुए दान-शील-तप और भाव रूप धर्म की आराधना नहीं की ।

लाभांतराय कर्म के क्षयोपशम से मुझे इस जीवन में धन भी खूब मिला, परंतु परिग्रह संज्ञा की अधीनता के कारण इस धन का भी मैंने संग्रह ही किया अथवा तो इस धन का उपयोग सिर्फ इस जीवन के भौतिक सुखों को पाने में ही किया ।

धन मिला और मैंने बंगला बनाया ।

धन मिला और मैंने नई-नई गाडियाँ खरीदी ।

धन मिला और मैंने हॉटलों में जाकर मोज-मजा मस्ती ही की ।

परंतु उस धन का सही उपयोग नहीं किया । सुपात्र की भक्ति में, मैंने उस धन का उपयोग नहीं किया ।

जिन भक्ति में होनेवाला धन-व्यय मुझे निरर्थक लगा ।

साधु-साध्वीजी को सुपात्रदान में उत्साह नहीं जगा ।

कभी-कभार दान भी किया तो वह दान भी दान-धर्म नहीं बना ।

दान के साथ जब प्रतिफल की इच्छा घुल मिल जाती हैं तो वह दान, दान धर्म नहीं कहलाता है ।

हे प्रभु !

आपने तो यह दान धर्म, धन की मूर्च्छा उतारने के लिए बतलाया हैं, परंतु मैंने तो दान देकर भी धन की मूर्च्छा को ही पुष्ट किया है ।

दान के बदले में इस लोक या परलोक के सुख की चाहना करने से वह दान भी विषानुष्ठान और गरल अनुष्ठान बन जाता है ।

मैंने दान किया परंतु मेरा वह दान, दान धर्म नहीं बन पाया ।

प्रभु ने `शील' धर्म भी विषयों की आसक्ति को तोडने के लिए बतलाया है, परंतु मैंने तो शील का पालन करके भी विषयों की आसक्ति का ही पोषण किया है ।

अभव्य आत्मा देवलोक के दिव्य सुखों को पाने के लिए कठोरतम चारित्र धर्म का भी पालन करती है और वह निरतिचार शील धर्म का भी पालन करती है ।

इस शीलधर्म के पालन से वह नौ ग्रैवेयक तक के दिव्य सुखों को भी प्राप्त करती है ।

इस प्रकार उस आत्मा का शील पालन भी दिव्य सुखों को पाने के लिए होने से वह शीलधर्म नहीं बना । भूतकाल में मेरी आत्मा ने अनंतबार देवलोक के दिव्य सुखों का भी भोग किया है, परंतु उन सुखों के भोग से भी तृप्ति कहाँ हुई है !

भस्मक का रोगी चाहे जितना भोजन करे, फिर भी वह भूखा ही रहता है, उसी प्रकार भूतकाल में अनंत बार देवलोक और मनुष्यलोक के भौतिक भोग सुखों को प्राप्त किया, परंतु उनमें कभी भी तृप्ति का एहसास नहीं किया ।

ईंधन से कभी आग तृप्त नहीं होती है अथवा चाहे जितनी नदियों का जल मिल जाय, सागर कभी तृप्त नहीं होता हैं, इसी प्रकार चाहे जितने वर्षों या चाहे जितने भवों तक देवलोक के दिव्य सुखों का भोग किया जाय, फिर भी आत्मा को तृप्ति नहीं होती है ।

हे प्रभो !

विषयों की आसक्ति के कारण शील धर्म का पालन ही नहीं किया अथवा शीलधर्म का पालन भी मैंने विषयों की आसक्ति के पोषण में ही किया ।

सचमुच, आपकी आज्ञानुसार मैंने शीलधर्म का पालन ही नहीं किया है ।

हे प्रभो !

अभव्य और दुर्भवी आत्मा भी चारित्र धर्म का स्वीकार कर निरतिचार चारित्र का पालन करती है, परंतु उस चारित्र-पालन एवं शील-पालन का मुख्य उद्देश्य देवलोक के दिव्य भौतिक सुखों को पाना ही होता है ।

अभव्य आत्मा भी निरतिचार द्रव्य चारित्र का पालन कर नौवें ग्रैवेयक तक के देवलोक में जा सकती है ।

जीवन पर्यंत शील धर्म का पालन करती है और उसके फलस्वरुप देवलोक के दिव्य सुखों को प्राप्त करती है । उन सुखों के भोग द्वारा पुनः पापकर्म का बंधकर पुनः संसार में भटकती है ।

जिस संयम धर्म का पालनकर आत्मा शाश्वत सुख प्राप्त कर सकती है, उसके बदले क्षणिक देवलोक के दिव्य सुखों की इच्छा कर वह आत्मा पुनः अपने दीर्घकालीन संसार को बढा देती है ।

हे प्रभो ! अज्ञानता व मोह के वश होकर मैंने भी यही कार्य किया है ।

मैंने भी दीक्षा ली, शील पालन भी किया, परंतु अन्तर्मन में देवलोक के दिव्य सुखों की ही चाहना होने से मेरा शील पालन भी व्यर्थ ही गया है ।

इसी प्रकार, हे परमात्मा ! मैंने तप धर्म का भी आचरण नहीं किया अथवा किया तो भी उसके मूल भूत उद्देश्य को भूलकर ही किया है ।

तप धर्म का वास्तविक फल तो कर्मों की निर्जरा और मोक्ष फल की प्राप्ति ही है ।

परंतु मोह के अधीन होकर मैंने कठोरतम तप का आचरण भी किया, परंतु वह भी अपने भावी संसार को पुष्ट करने के लिए ही ।

एक मात्र संसार के भौतिक सुखों को पाने के लिए किया गया तप भी संसार-वृद्धि का ही कारण बनता है ।

चक्रवर्ती के स्त्री रत्न को पाने की लालसा से संभूति मुनि ने कठोर तप किया, परंतु उस तप द्वारा भी उसने अपने संसार को बढाया ।

अग्निशर्मा तापस ने लाखों वर्षों तक मासक्षमण के पारणे मासक्षमण का उग्र तप करके भी उसने अपनी आत्मा का अनंत संसार ही बढाया, अतः उसका वह तप निरर्थक ही गया ।

हे प्रभो !

भूतकाल में मैंने भी वे ही भूलें की है । खाने की लालसा आदि के कारण मैंने तप धर्म का आचरण नहीं किया ।

तप करने की शक्ति होने पर भी कोई न कोई बहाना निकालकर तप धर्म का आचरण नहीं किया । कई बार तप तो किया परंतु जिनाज्ञानुसार नहीं किया ।

संसार में जीव मोह के अधीन बनकर भी तप धर्म का सेवन करता है ।

जैसे–हॉर्ट की बायपास सर्जरी थी तब डॉक्टर के कहने से कुछ भी खाया पीया नहीं अर्थात् भूखा और प्यासा रहा !

रेल्वे का Accident हो गया तब जंगल में ही ट्रेन रुक गई । खाने-पीने की कुछ भी सामग्री पास में नहीं थी । अतः मजबूरी से 15-20 घंटे भूख और पास सहन की ।

Vomiting हो रही थी, खाया हुआ कुछ भी पेट में रहता नहीं था, अतः मजबूरी से थोडे समय के लिए कुछ भी खाया-पीया नहीं ।

यहां भूख तो सहन की, परंतु मजबूरी से, त्याग की भावना से नहीं ।

इसी प्रकार डायाबिटीज, कोलोस्ट्रोल आदि के बढने पर घी व मिठाई को छोडा, परंतु वहां भी त्याग की भावना नहीं थी, सिर्फ मजबूरी ही थी, अतः वह तप भी वास्तव में तप नहीं कहलाता ।

मृत्यु के निकट आने पर परलोक में देवलोक के दिव्य सुखों को पाने की लालसा से नियाणा किया, स्वेच्छा से आहार आदि का त्याग नहीं किया ।

धन आदि के लोभ से, प्रभावना प्राप्ति के लोभ से भी कई बार तप धर्म का आचरण किया, परंतु वह सब तप निष्फल ही गया अतः तप करने पर भी, नहीं करने बराबर ही था ।

हे प्रभो !

मन को निर्मल बनाने के लिए आपने भावधर्म का उपदेश दिया, परंतु मैंने अपने मन को शुभ भावनाओं से भावित नहीं किया, परंतु मन को मलिन भावनाओं से ही भावित किया ।

जिस भावधर्म में आत्मा को कर्म के बंधन से मुक्त करने की शक्ति रही हुई है, उसी मन का उपयोग मैंने अशुभ भावनाओं से भावित बनाने में ही किया, जिसके फल स्वरूप मेरी आत्मा ने अपना संसार ही बढाया है । दान-शील-तप और भाव रूप चार प्रकार के धर्मों में भाव धर्म की ही प्रधानता है ।

(क्रमशः)



शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

आत्मा का मौलिक स्वरुप

हे आत्मन् ! समत्व से युक्त एकता का तू भावन कर, जिससे नमि राजर्षि की तरह तुझे परमानन्द की सम्पत्ति प्राप्त होगी ।

समतायुक्त एकत्व भावना का प्रभाव

समता आत्मा का स्वभाव है । समता अर्थात् माध्यस्थ दशा । न इष्ट का राग और न अनिष्ट का द्वेष । न मित्र पर प्रेम और न शत्रु के प्रति घृणा । न स्वर्ण की आसक्ति और न ही तृण का तिरस्कार ।

सर्व अवस्थाओं में माध्यस्थ रहना, यह आत्मा का स्वभाव है । इस स्वभाव की प्राप्ति से आत्मा वीतराग बन जाती है और मोह के जाल से सर्वथा मुक्त हो जाती है । मोह से मुक्त आत्मा सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बन जाती है और सर्वज्ञ-सर्वदर्शी आत्मा अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन के उपयोग में लीन रहती है । वह सुख के महासागर में डूब जाती है । इस संसार के समस्त सुखी प्राणियों का सुख इकट्ठा किया जाय तो भी वह सुख एक सिद्धात्मा के एक आत्मप्रदेश द्वारा अनुभूत सुख के बराबर भी नहीं है । आत्मसुख के आगे इन्द्र और चक्रवर्ती के सुख भी नगण्य हैं ।

इस आत्मसुख की प्राप्ति आत्मा की एकत्व भावना से होती है ।

एकता के भावन में नमि राजर्षि का दृष्टान्त प्रसिद्ध है ।

◆ वेदना में से विराग की ज्योति प्रगटाने वाले नमिराजा मिथिला के अधिपति थे । सती मदनरेखा के सुपुत्र नमिराजा छह मास से भयंकर वेदना से ग्रस्त थे । अनेक उपचारों के बावजूद भी उनके स्वास्थ्य में लेश भी सुधार नहीं हो रहा था । समय-समय की बात है, एक बार के अत्यन्त सुखी नमिराजा आज दुःख की आग में तपे जा रहे थे ।

राजसिंहासन पर बैठने वाले नमिराजा शय्या पर पड़े-पड़े अपनी वेदना भोग रहे थे ।

नमिराजा के देह की रक्षा के लिए सैकड़ों वैद्य प्रयत्नशील थे.....परन्तु वेदना में थोड़ा भी अन्तर नहीं पड़ रहा था । अन्त में एक उपचार उन्हें लागू पड़ गया । चन्दन के लेप से उन्हें शीतलता का अनुभव होने लगा.....और नमिराजा की शान्ति से सभी के चेहरे प्रसन्न बन गए । राजरानियाँ आदि सभी महाराजा की शान्ति के लिए चन्दन घीसने लगीं । सभी रानियाँ निरन्तर चन्दन घिस रही थीं, इस प्रकार चन्दन घीसते समय राजरानियों के हाथों में रहे कंकण परस्पर टकराकर आवाज करने

लगे । कंकण के टकराने से उत्पन्न ध्वनि को सहन करने में नमिराजा अशक्त हो चुके थे, अतः वे चिल्ला उठे-**''अहो ! आज मेरे सब दुश्मन बन गए । इस प्रकार कर्णभेदी आवाज क्यों हो रही है ?''**

महाराजा के भाव को जानते ही सभी महारानियों ने अपने हाथों में से एक कंकण को छोड़, शेष कंकण उतार दिये और थोड़ी ही देर बाद कंकण की मर्मभेदी ध्वनि शान्त हो गई । फिर भी राजरानियाँ जोरों से चंदन घीसे जा रही थीं । तभी महाराजा ने कहा-**''मंत्रीश्वर ! क्या चन्दन का घीसना बन्द हो गया है, वही तो मेरा जीवन है । देखो, अभी चन्दन घिसने की आवाज तो नहीं आ रही है ।''**

मंत्री ने कहा-**''राजन् ! चन्दन के विलेपन के प्याले तैयार हैं । चन्दन का घिसना बंद नहीं हुआ है, किन्तु महारानियों ने अपने हाथों में से एक कंकण को छोड़ शेष कंकण उतार दिये हैं, अतः उनकी आवाज बन्द हो गई है । जहाँ दो कंकण टकराते हैं, वहाँ आवाज होती है और जहाँ एक ही कंकण होता है, वहाँ आवाज का प्रश्न ही नहीं है ।''**

मंत्रीश्वर की यह बात सुनते ही नमि महाराजा को आत्म-चिन्तन की नई दिशा मिल गई । वे सोचने लगे-**''एक में शान्ति, अनेक में अशान्ति ।''**

वेदना की आग में से नमिराजा की अन्तश्चेतना जागृत हो गई और अपनी चिन्तनधारा में वे आगे बढ़ने लगे, **'एक में आनन्द है । जहाँ दो, वहाँ कलह और क्लेश है । एक कंकण में कितनी शान्ति है और दो में कितना कोलाहल ! आध्यात्मिक जगत् में भी यह बात उतनी ही सत्य है, जो आत्मा अकेली बन गई.....निःसंग बन गई, वह कितनी शान्त हो जाती है ।'**

शैशव काल में प्राणी अकेला होता है, अतः कितना आनन्दमय होता है ! यौवन को पाते ही वह दो बनना चाहता है और फिर दो में से चार.....। बस, एकता का भंग हो गया और चिन्ताओं ने उसे घेर लिया । जीवन की शान्ति धूल में मिल गई । ओह ! एकता में आनन्द.....अनेकता में शोक ।

और इस चिन्तन से नमिराजा के चेहरे पर प्रसन्नता छाने लगी । एकता की भावना ने ही उन्हें शान्ति के महासागर में डुबो दिया । कार्तिक पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र की भाँति उनके चेहरे पर प्रसन्नता बढ़ने लगी और उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया-**''यदि इस वेदना से मैं मुक्त हो जाऊँ तो प्रातःकाल ही संसार का त्याग कर प्रभुपंथ का पथिक बन जाऊँगा ।''**

दृढ़ संकल्प में एक महान् शक्ति होती है और उससे विपत्तियों के सब बादल दूर हो जाते हैं ।

बस, इस संकल्प के बाद नमिराजा की आँखें निद्रा से घिर गईं और उन्होंने अत्यन्त शान्ति का अनुभव किया । सभी वैद्य तो इसी भ्रम में थे कि आखिर हमारी औषधि का प्रयोग सफल हो गया ।

प्रातःकाल के प्रकाश के पूर्व नमिराजा एक स्वप्न में लीन थे । स्वर्ण के मेरुपर्वत पर उन्होंने अपने आपको घूमते हुए देखा । और फिर तो उन्हें जातिस्मरण ज्ञान हो गया । पूर्व के तीसरे भव में एकता-समता की साधना करने वाले वे एक साधक महात्मा थे । उस जीवन को पूर्ण कर वे देव बने थे । उस देवभव में सैकड़ों तीर्थंकरों के जन्माभिषेक का महोत्सव इसी मेरुपर्वत पर उन्होंने किया था ।

गत जन्म के इस जातिस्मरण ज्ञान ने उनके विराग के दीप को अधिक प्रज्वलित किया और प्रातः होते ही वे त्याग की यात्रा पर प्रयाण कर गए । सारी मिथिला विलाप कर रही थी । नमिराजा के इस संसार-त्याग से मिथिलावासियों के चेहरों पर गाढ़ उदासीनता नजर आ रही थी ।

चारों ओर से क्रन्दन की आवाज सुनाई दे रही थी । किन्तु नमिराजा अपने संकल्प पर दृढ़ थे । वीरों का संकल्प पत्थर की लकीर होता है । वे उस क्रन्दन से पीछे हटने वाले नहीं थे ।

ब्राह्मण के वेष में इन्द्र महाराजा ने आकर उनकी परीक्षा ली । नाना प्रकार की समस्याएँ प्रस्तुत कीं, परन्तु नमिराजा के उत्तर को सुनकर इन्द्र महाराजा भी चकित रह गए । इस प्रकार एकत्व भावना की चिनगारी में से विराग के रागी बनकर अन्त में नमि राजर्षि वीतराग बन गए ।

हे आत्मन् ! तू वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप का चिन्तन कर । इस जगत् में वास्तव में अपना क्या है ? इस प्रकार की बुद्धि जिसके हृदय में उत्पन्न होती है, क्या उसे किसी प्रकार के दुःख का उदय हो सकता है ?

जगत् का वास्तविक दर्शन करो :– पूज्य उपाध्याय श्री विनयविजयजी म. एकत्व भावना के गेयाष्टक में अपनी आत्मा को ही सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे विनय ! तू जरा विचार कर, इस संसार में तेरा क्या है ?

इस एक वाक्य के चिन्तन में तो सोचने की नई दिशा मिल जाती है । वास्तव में, इस दुनिया में जितने भी पाप हैं अथवा हो रहे हैं, उन सब का मूल सांसारिक वस्तुओं पर रही हुई ममत्व-स्वामित्व की भावना ही है । इस ममत्व के कारण ही आत्मा इस संसार में चारों ओर भाग-दौड़ करती है और इष्ट विषय की प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के पापकर्म-दुष्कर्म आदि करती है । वह सांसारिक व्यक्तियों व वस्तुओं में **'अपनेपन-पराएपन'** की कल्पना कर लेती है ।

इस ममत्व की बुद्धि से जीवात्मा विशाल क्षेत्र का मालिक बनने का प्रयत्न करता है । धन के ढेर खड़े कर देता है । परन्तु जब आयुष्य समाप्त हो जाता है, तब सब यहीं रह जाता है और जीवात्मा को अकेला ही जाना पड़ता है । जरा, कवि की भावपूर्ण पंक्तियों का गान कर लें-

तू चेत मुसाफिर ! चेत जरा, क्यों मानत मेरा-मेरा है ।
इस जग में नहीं कोई तेरा है । जो है सो सब ही अनेरा है ।।
.....ए काया नश्वर तेरी है, एक दिन वो राख की ढेरी है,
यहाँ मोह का खूब अंधेरा है, क्यों मानत मेरा-मेरा है ।।

जरा, गहराई से सोचेंगे तो पता चलेगा कि इस संसार में अपना कोई नहीं है । छह खण्ड का अधिपति-चक्रवर्ती भी मृत्यु के समय एक फूटी कौड़ी भी साथ में नहीं ले जा सकता है ।

◆ सिकन्दर ने अपने जीवन में धन के ढेर लगा दिये थे, किन्तु मृत्यु समय वह अपने साथ क्या ले गया ? सोने के ढेर करने वाला मोहम्मद गजनवी जीवन के अन्तिम दिनों में पागल हो गया था और कुत्ते की मौत मरा था ।

'इस संसार में मेरा कोई नहीं है' इस सत्य को जीवन में पचा लिया जाय तो व्यक्ति अनेक पापों से बच सकता है । दुनिया में अधिकांशतः पाप क्षणिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए ही होते हैं । परन्तु इस सत्य को जान लेंगे तो इस प्रकार के अनर्थदंड के पापों से जीवात्मा आसानी से बच सकेगा ।

(क्रमशः)



शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5 एवं वर्धमान तपोनिधि साध्वी श्री धर्मज्ञाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-2 चातुर्मास हेतु श्री पिण्डवाडा जैन संघ में बिराजमान है । श्री संघ में उत्साह और उल्लास के साथ धर्माराधना चल रही है ।

प्रतिदिन प्रात: 9.45 से 11.15 बजे तक प्रवचन दरम्यान पूज्य आचार्य भगवंत के श्रीमुख से सिन्दुर प्रकर ग्रंथ एवं भगवान महावीर स्वामी की पट्टधर परंपरा के आधार पर जिनवाणी का प्रवाह बह रहा है । पिछले अनेक वर्षों के बाद हिन्दी भाषा में प्रेरणादायी प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त होने के कारण अधिक संख्या में आराधक बडे उत्साह के साथ जिनवचन का अमीपान कर रहे है ।

पर्युषण महापर्व की आराधना के निमित्त मुंबई, सुरत, अहमदाबाद आदि विभिन्न क्षेत्र से पिण्डवाडा वासियों का आगमन हुआ ।

दि. 7 सितंबर को समाधि साधक पूज्य पंन्यास प्रवर श्री पद्मविजयजी म.सा. की 65वीं स्वर्गारोहण पुण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद प्रवचन हुआ । पूज्यश्री ने उनकी अंतिम समाधि एवं केन्सर की भयंकर वेदना में भी मासक्षमण आदि दीर्घ तपश्चर्या का मार्मिक वर्णन किया । गुणानुवाद सभा के बाद गाजे बाजे के साथ सकल संघ उनके समाधि मंदिर के दर्शनार्थ गया ।

पर्युषण महापर्व

दि. 8 सितंबर से पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का मंगल शुभारंभ हुआ । 28 आराधकों ने पौषध व्रत स्वीकार किया । प्रात: 9.30 बजे प्रवचन दरम्यान पूज्यश्री ने पर्युषण पर्व के कर्तव्यों का मार्मिक वर्णन किया । दोपहर 2.30 बजे श्री महावीर स्वामीनी जिनालय में श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा का आयोजन हुआ । श्री संघ के श्रावक वर्ग ने पूजा पढाकर राजस्थानी परंपरा का सुंदर आदर्श प्रस्तुत किया । शाम 6.30 बजे मंदिर में संध्याभक्ति एवं समूह आरती हुई । प्रतिदिन देवसी प्रतिक्रमण में लगभग 250 श्रावक एवं 350 श्राविकाओं ने आराधना की ।

दि. 9 सितंबर को प्रात: 9.30 बजे प्रवचन दरम्यान पूज्यश्री ने क्षमापना आदि कर्तव्यों पर प्रवचन किया । दोपहर 2.30 बजे मंदिरजी में अंतराय कर्म निवारण पूजा पढाई गई ।

दि. 10 सितंबर को प्रवचन के बाद ज्ञानपूजा एवं अष्टप्रकारी पूजा के चढावे हुए । कल्पसूत्र घर ले जाने का चढावा 5100 मण में मातुश्री लीलाबेन समरथमलजी कालीदासजी परिवार ने लिया एवं उनके गृहांगण में गाजे-बाजे के साथ कल्पसूत्र ग्रंथ ले जाया गया । दोपहर 2.30 बजे मंदिरजी में वेदनीय कर्म निवारण पूजा पढाई गई ।

दि. 11 सितंबर को प्रात: 8.30 बजे श्री कल्पसूत्र की पांच ज्ञान पूजा अष्टप्रकारी पूजा आदि विधि-विधान हुए । फिर इन्दरमलजी वीरचंदजी

परिवार ने पूज्यश्री को कल्पसूत्र अर्पण कर प्रवचन हेतु विनती की । पूज्यश्री ने कल्पसूत्र का प्रथम प्रवचन किया । दोपहर 3.00 बजे मु. स्थूलभद्रविजयजी म.सा. ने दूसरा प्रवचन दिया ।

दि. 12 सितंबर को प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्री ने कल्पसूत्र का तीसरा और चौथा प्रवचन किया । फिर दोपहर 3.00 बजे 14 स्वप्न एवं पालनाजी संबंधी चढावे हुए । पालनाजी घर लेकर जाने का चढावा 31,000 मण में अशोककुमार वीरचंदजी परिवार ने लिया । अन्य भी देवद्रव्य एवं साधारण द्रव्य संबंधी चढावे हुए । शाम 5.00 बजे पूज्यश्री ने भगवान महावीर का जन्मवाचन किया । जन्मवाचन श्रवण के साथ ही श्री संघ में हर्षोल्लास का वातावरण हो गया । फिर गाजे बाजे के साथ प्रभुजी का पालना अशोककुमारजी के गृहांगण में ले गए ।

दि. 13 सितंबर को प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्रीने कल्पसूत्र का पांचवाँ प्रवचन किया । दोपहर 3.00 बजे मु. स्थूलभद्रविजयजी ने गणधरवाद का प्रवचन किया ।

पुस्तक विमोचन

दि. 14 सितंबर को प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्री ने कल्पसूत्र का सातवाँ प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद पंजाब देशोद्धारक न्यायांभोनिधि **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा आलिखित एवं जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा आधुनिक हिन्दी में अनुवादित **''नवतत्त्व संग्रह''** के विमोचन का भव्य कार्यक्रम हुआ ।

लालराई से पधारे संगीतकार सोहनभाई ने भक्तिसंगीत प्रस्तुत किया । सेवन्तीलालजी भाईचंदजी, सुरेशकुमारजी सरेमलजी एवं सुरेश-कुमारजी जयचंदजी ने ज्ञान दीपक प्रज्वलित किया । फिर पंकजभाई, प्रकाशभाई बडोल्ला एवं नरेशभाई ने सभा को पुस्तक, लेखक एवं अनुवादक पूज्यश्री का परिचय दिया । श्री संघ के अध्यक्ष महेशभाई राठोड़ ने हिन्दी साहित्य की उपयोगिता एवं बाल संस्करण की आवश्यकता पर वक्तव्य दिया ।

अंत में जसवंतसिंहजी सुराणा-उदयपुर, प्रकाशझी बडोल्ला-बेंगलोर, महेशजी राठोड (अध्यक्ष), महेन्द्रभाई पुखराजजी, विक्रमकुमार भरतजी, अशोकजी मरडिया, मनीषभाई जैन आदि ने पूज्यश्री द्वारा संपादित 279वीं पुस्तक **''नवतत्त्व संग्रह''** का भव्य विमोचन किया ।

आज पूज्यश्री के 69वें जन्म तिथि निमित्त श्री संघ में लगभग 5 लाख रुपये की जीवदया टीप हुई । अंत में बारसासूत्र संबंधी ज्ञान पूजा, अष्टप्रकारी पूजा आदि चढावे हुए । बारसा सूत्र घर लेकर जाने का चढावा 1,501 मण में रणजीतमलजी छोटालालजी परिवार ने लिया । वहोराने का चढावा 3,601 मण में इन्दरमलजी वीरचंदजी नेमजी परिवार ने लिया ।

कार्यक्रम के बाद रणजीतमलजी छोटालालजी के गृहांगण में गाजे-बाजे के साथ बारसा सूत्र ले जाया गया । दोपहर 3.00 बजे बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म. ने कल्पसूत्र का आठवाँ स्थविरावली प्रवचन किया ।

दि. 15 सितंबर को संवत्सरी महापर्व निमित्त लगभग 50 आराधकों ने पौषध व्रत स्वीकार किया । प्रात: 8.30 बजे से बारसा सूत्र की ज्ञानपूजा आदि विधि-विधान हुए । फिर इन्दरमलजी वीरचंदजी परिवार ने बारसा सूत्र वहोराकर वाचन हेतु हार्दिक

विनती की । पूज्यश्री एवं दोनों महात्माओने बारसासूत्र का संयुक्त रूप से वाचन किया । लगभग 600 लोगों ने बारसा सूत्र का श्रवण किया । अंत में पूज्यश्री ने उपशम भाव की महिमा बताई । फिर गाजे-बाजे के साथ श्री सीमंधर स्वामी जिनालय एवं श्री संभवनाथ जिनालय की चैत्य परिपाटी हुई ।

दोपहर 3.30 बजे से संवत्सरी प्रतिक्रमण संबंधी चढावे हुए । ठीक 4.30 बजे संवत्सरी प्रतिक्रमण प्रारंभ हुआ ।

दि. 16 सितंबर को प्रात: 5.30 बजे श्री महावीर स्वामी जिनालय, श्री गोडी पार्श्वनाथ जिनालय एवं श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय का द्वारोद्घाटन हुआ । फिर मातुश्री राजुलबेन छगनलालजी एवं दिलीपकुमार प्रतापचंदजी के गृहांगण में 16 उपवास की तपश्चर्या निमित्त श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले हुए ।

पर्युषण महापर्व निमित्त श्री संघ में 2 आराधकों ने 16 उपवास, 11 आराधको ने अट्ठाई, 32 आराधकों ने छट्ठ-अट्ठम एवं 35 आराधकों ने अट्ठम की तपश्चर्या की । सभी तपस्विओं के पारणे का लाभ मातुश्री राजुलबेन छगनलालजी तिलोकचंदजी परिवार ने लिया । दोपहर 3.00 बजे प्रभुजी की भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ । प्रभुजी का रथ श्रावक वर्ग ने वहन किया । रथयात्रा के बाद श्री संघ का स्वामी वात्सल्य हुआ ।

पिण्डवाडा के पास **'झाडोली'** गांव में पूज्यश्री की आज्ञा से **पू. मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** एवं **पू. मुनिश्री पुण्यबलविजयजी म.सा.** की शुभ निश्रा में पर्युषण महापर्व निमित्त खूब सुंदर आराधना संपन्न हुई । लगभग 150 आराधक जुडे । पिछले 20 वर्षों में इस वर्ष उत्साह उल्लास पूर्वक सर्वाधिक चढावे हुए ।

दि. 17 सितंबर से बालमुनि श्री विमलपुण्य-विजयजी म.सा. के आचारांग सूत्र के योगोद्वहन का शुभारंभ हुआ । फिर प्रात: 10.00 बजे से प्रतिदिन पूज्यश्री के सिन्दुर प्रकर ग्रंथ के आधार पर प्रवचन हुए । पर्युषण पर्व के बाद भी रोज लगभग 150 श्रोताओं की प्रवचन में हाजरी रही ।

दि. 24 सितंबर को स्व. जयंतिलालजी शिवलालजी जोगातर के आत्मश्रेयार्थ मेहता वाडी में श्री शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा का आयोजन हुआ । प्रात: 10 से 11 तक पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । फिर विनयभाई ने भाववाही शत्रुंजय की भावयात्रा कराई एवं संगीतकार नमनभाई ने भक्ति संगीत प्रस्तुत किया ।

दि. 27 सितंबर से नौ दिवसीय नवकार महामंत्र के जाप सहित नौ एकासने की आराधना का शुभारंभ हुआ । इस आराधना में लगभग 62 आराधक जुडें । प्रवचन दरम्यान पूज्यश्री ने नवकार महामंत्र की महिमा का मार्मिक वर्णन किया ।

आगामी कार्यक्रम

दि. 18 अक्टूबर से नवपद ओली का प्रारंभ

दि. 24 से 26 अक्टूबर तक

त्रि दिवसीय जिनभक्ति महोत्सव ।

दि. 7 व 8 नवंबर को

वीर-प्रभु के निर्वाण कल्याणक निमित्त

छट्ठ तप की भव्य आराधना ।

दि. 23 नवंबर

चौमासी चौदस की आराधना ।

दिव्य संदेश प्रकाशन आयोजित 'महासतियाँ भाग-1' (Open Book Exam) ई.सन्. 2025 पर आधारित परीक्षा पत्र परिणाम–Result

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
1.	नम्रता जैन	हैद्राबाद	197	34.	यथंग कटारीया	अमरावती	193
2.	कल्पना जैन	सुरत	196	35.	टिया नागोरी	वडोदरा	193
3.	साध्वी शशीप्रभाजी	सुरत	195.5	36.	श्वेता भालगट	पनवेल	193
4.	दीक्षिता जैन	गुंटुर	195	37.	ममता सिंघवी	पाली	192
5.	ममता कोठारी	नवी मुंबई	195	38.	रमेश जैन	लुधियाना	192
6.	मंजु पोखरना	जयपुर	195	39.	चंद्रा बोहरा	रायचुर	192
7.	रीना चोपडा	कबीरधाम	195	40.	शिखा संघवी	बेंगलोर	192
8.	राजकुमार बांठीया	पाली	195	41.	निहारीका शाह	पुणे	192
9.	हीना नागोरी	उदयपुर	194.5	42.	रुपल मेहता	के.जी.एफ.	192
10.	मनीषा पोखरणा	अजमेर	194	43.	सुशीला राका	जलगांव	192
11.	सुशीला रांका	रतलाम	194	44.	सीमा पोखरना	चित्तोढ़गढ	192
12.	टीना जैन	गुंटुर	194	45.	कौशल जैन	दिल्ही	192
13.	मंजु पीपारा	भीलवाडा	194	46.	सीमा जैन	मन्दसौर	191
14.	ज्योति शाह	मुंबई	194	47.	प्रेमलता जैन	आनंद	191
15.	बर्खा जैन	इन्दौर	194	48.	कल्पना गोठी	बेतुल	191
16.	अल्का गोलेचा	भवानी मण्डी	194	49.	किरण छाजेड	इन्दौर	191
17.	बिना जालोरी	वडोदरा	194	50.	मंजु पोखरना	जयपुर	191
18.	मनीष्का जैन	मनोहरठाणा	194	51.	रवि जैन	नागडा	191
19.	नरेन्द्र जैन	रायचुर	194	52.	इन्दु लुनीया	इरोड	191
20.	उषा लालवानी	पुणे	194	53.	मीना गांधी	जंखण्डी	190
21.	शुभांगी जैन	नीम्बाहेडा	194	54.	ज्योत्स्ना लोढा	अजमेर	190
22.	नमीता गांधी	रत्नागिरी	193	55.	प्रमीला कीमती	इन्दौर	190
23.	सरोज संघवी	बैंगलोर	193	56.	निलम ओसवाल	रत्नागिरी	190
24.	निर्मला मेहता	अजमेर	193	57.	प्रतीक्षा दुधेडिया	पुणे	190
25.	भारती बोथरा	जियागंज	193	58.	माधुरी भण्डारी	इन्दौर	190
26.	कुसुम फोफलीया	जयपुर	193	59.	बबली जैन	सीरसा	190
27.	ईश्वर पटेल	उज्जैन	193	60.	संगीता गर्ग	सीरसा	190
28.	सीमा गांधी	चैन्नाई	193	61.	प्रमीला कोचेटा	अशोकनगर	190
29.	संतोष जैन	दिल्ही	193	62.	ममता जैन	हावडा	190
30.	सुनिता जैन	दिल्ही	193	63.	भारती गांधी	मुंबई	190
31.	मोहिनी कोठारी	अहमदाबाद	193	64.	मंजुला आर.के.	बेंगलोर	190
32.	हेमांगीनी शाह	अहमदाबाद	193	65.	नम्रता जैन	पुणे	190
33.	रीटा जैन	पुणे	193	66.	प्रोमीला जैन	दिल्ही	190

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
67.	वंदना जैन	दिल्ही	190	104.	ज्योति बेगानी	रायपुर	185
68.	मालीनी जैन	दिल्ही	190	105.	मंजुला सी. शाह	मैसुर	185
69.	टीना संघवी	हैद्राबाद	190	106.	रामा कोठारी	रतलाम	185
70.	अरुण कुमार जैन	सीरसा	189	107.	चित्रा शेठ	जयपुर	185
71.	रुपरेखा कोचर	चैन्नई	188	108.	भावना जैन	मुंबई	185
72.	गुणबालाजी तलेसरा	पाली	188	109.	सोनाली भंसाली	अहमदाबाद	184
73.	सरोज गोलछा	राजनंदगांव	188	110.	तारा जैन	इन्दौर	184
74.	संजु गोलछा	हावडा	188	111.	अंजु जैन	चंडीगढ	184
75.	कमला लोढा	मुंबई	188	112.	रेणु कोठारीया	यवतमाल	183
76.	नेन्सी शाह	मुंबई	188	113.	रेणुका शाह	अहमदाबाद	183
77.	बिना जैन	दिल्ही	188	114.	आर. शोभा बुलेछा	चैन्नई	183
78.	संगीता जैन	रत्नागिरि	188	115.	निर्मला नाहर	चैन्नई	183
79.	उज्ज्वला कुचेरीया	शेवली	188	116.	मंजु काष्टिया	कोलकत्ता	182
80.	मनीषा चलाणी	नांदेड	188	117.	रक्षा गांधी	रत्नागिरि	182
81.	रंजना माथा	रायपुर	187	118.	गरीमा जैन	खालवा	180
82.	सपना खातोड	सुरत	187	119.	शुष्मा मेहता	चैन्नई	180
83.	चंदा कोठारी	रत्नागिरि	187	120.	सुनंदा जैन	गंगापुर	180
84.	कमला हरकावत	उदयपुर	187	121.	चित्रा जैन	दिल्ही	180
85.	राधा बोहरा	बेंगलोर	187	122.	ममता जैन	दावणगरि	180
86.	अंजुला नाहर	इन्दौर	187	123.	भावना राठोड	कोल्हापुर	180
87.	पुनम गुंदेचा	रत्नागिरि	187	124.	तारा संचेती	पुणे	175
88.	एन.के. गांधी	वडोदरा	187	125.	सरोज गोलेचा	सानावाड	175
89.	मयणा जैन	भीलवाडा	187	126.	अमीता श्रीमाल	रतलाम	175
90.	प्रिया जैन	सुरत	187	127.	उर्मिला जैन	बैंगलोर	175
91.	साधना छाजेड	करही	187	128.	भुरचंद तातेड	पाली	175
92.	भावना शाह	अहमदाबाद	187	129.	मुलनमल बाबुलाल	इचलकरंजी	175
93.	श्वेता जैन	नौपाडा-ठाणा	187	130.	विना ओसवाल	कर्जत	173
94.	रीता ओसवाल	रत्नागिरि	186	131.	सोनल कोठारी	वणी	171
95.	निलिमा गांधी	रत्नागिरि	186	132.	दर्शना कोठारी	वणी	171
96.	दुर्गाबेन पुनमिया	मुंबई	186	133.	पद्मा जैन	मुंबई	170
97.	कल्पना शाह	अहमदाबाद	186	134.	मीरा कोठेचा	वणी	170
98.	सुशीला मेहता	पाली	185	135.	चेतना हालवाडीया	वणी	170
99.	चपला कुकरा	कोटा	185	136.	संध्या हालवाडीया	वणी	165
100.	मंगला मोदी	पाली	185	137.	वंदना भण्डारी	वणी	165
101.	चंद्रकला कांकरिया	शीरुर	185	138.	पुजा कोठारी	वणी	155
101.	गुणमाला जैन	चित्तोड़गढ	185	139.	जयश्री दुग्गड	घाटानजी	155
102.	रीना मनोत	यवतमाल	185	140.	विजयलक्ष्मी चौपडा	साहसपुर	150

प्रवचन मोती

प्रवचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

2048. माया को नाश करने कारुण्य भाव । जिसके दिल में जीवों के प्रति करुणा है, वह जीवों के प्रति माया कैसे कर सकता है ।

2049. लोभ को नाश करने माध्यस्थ भाव ।

2050. छोटी छोटी बातों को Let Go करो, बडी बातों में Let God करो ।

2051. धर्म रूपी कल्प वृक्ष के लिए मैत्री आदि भावना मूल है ।

2052. बीज यदि बोया न जाय तो वह हमेशा बीज ही रहेगा और यदि बो दिया जाय अंकूरा फूटेगा । तो ही वह वट वृक्ष बन सकता है ।

2053. जीव तत्व के 14 भेद को जानकर हमें हमारी आत्मा का विचार करना है कि इन सभी जीव योनि में हमारी आत्मा ने अनंत काल दु:ख रुप में व्यतीत किया है ।

2054. सभी साधना का लक्ष्य मोक्ष तत्त्व है । जिसे पाने के लिए पुण्यानुबंधी पुण्य की जरुरत रहती है ।

2055. धर्म वृक्ष का मूल है मैत्री आदि भावना । जिसको यदि नहीं जाना है, समझा नहीं है, उसके लिए धर्म अति दुर्लभ है ।

2056. पूज्य पंन्यासजी के वाचना का यहा अंश है, दूसरों के दु:ख की अपेक्षा करने से अपना पुण्य खत्म होता है ।

2057. योगासार ग्रंथ में कहा है, धर्म रूपी वृक्ष का निर्माण भगवान ने किया ।

2058. जंगल के पौधे में सिंचन की जरुरत नहीं परंतु बगीचे के पौधे का सिंचन करना पडता है ।

2059. एक एक पन्ने पर सिंचन करने से कोई अर्थ नहीं, सिंचन मूल का करना है ।

2060. दूसरों को उपदेश देना सबसे सरल है, आचारण में लाना सबसे कठिन है ।

2061. मा-बाप भी वे ही सच्चे है, जो संतानों के आत्म हित की चिंता करे ।

2062. जगत् के सभी जीवों के साथ सभी प्रकार के संबंध हुए है । आत्महित करने वाले की चिंता का संबंध नहीं हुआ ।

2063. परमात्मा का सबसे बडा गुण परोपकार है ।

2064. शाश्वत सुखी बनाने का मार्ग बताने के कारण ही परमात्मा परम परोपकारी है ।

(क्रमश:)

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month



मरुधर रत्न पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आदि 5 ठाणा एवं पू.सा.श्री धर्मज्ञाश्रीजी म.
आदि ठाणा-2 का

चातुर्मास-पश्चात् मंगल-कार्यक्रम

दि. 13-14 तथा 15 सितम्बर 2026	भाडोली (जिला. सिरोही) ध्वजारोहण एवं तपस्वी पू.मु. श्री पुण्यबलविजयजी म. के एकांतर 500 आयंबिल निमित्त महोत्सव
दि. 3-4 तथा 5 जनवरी 2027	तखतगढ में मातुश्री भाग्यवंतीबेन तथा पिताजी शा. शांतिलालजी भूताजी का जीवित महोत्सव एवं उद्यापन
दि. 16 जनवरी 2027	कांकरोली (राजसमंद) में श्रीमती सरसोबाई हरकचंदजी कोठारी परिवार (बालीवाले) भरत संस बांद्रा निर्मित नूतन उपाश्रय का उद्घाटन समारोह
दि. 23 से 27 जनवरी	कांकरोली में शाश्वत परिवार दीपक ज्योति टॉवर मुंबई निर्मित शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय में अंजन शलाका प्रतिष्ठा
दि. 4 से 8 मार्च	शंखेश्वर महातीर्थ में संयम सुवर्ण वर्ष पूर्णाहूति महोत्सव
दि. 8 अप्रैल से	शत्रुंजय महातीर्थ में 12 से 25 वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिए महाराष्ट्र भवन सलोत भवन, पालीताणा में नवाणुं यात्रा का भव्य आयोजन

संपर्क सूत्र सहदेव M. 98672 04942

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of
DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4,
Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E),
Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor,
Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar
Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN